×प्र×त× प्रातः क्लास 22-7-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्तिः बेहद का बाप बेहद के बच्चों को बैठ समझाते हैं। सभी आत्माओं का बाप सभी आत्माओं को समझाते हैं। क्योंकि सर्व का सदगति दाता है। जो भी आत्मायें हैं जीवात्मायें ही कहेंगे। शरीर नहीं है तो आत्मा देख, सुन नहीं सकती है। भल ड्रामा के प्लेन अनुसार बाप स्वर्ग की स्थापना कर रहे हैं। परन्तु बाप कहते हैं मैं स्वर्ग को देखता भी नहीं हूं। जिन्हों के लिए है वही देख सकते हैं। तुमको पढ़ा कर फिर तो मैं कोई शरीर धारण करता नहीं हूं। तो बिगर शरीर देख कैसे सकुंगा। ऐसे नहीं जहां-तहां मौजुद हूं। सभी कुछ देखते हैं। नहीं। बाप सिर्फ देखते हैं तुम बच्चों को। जिनको ही गुल2 बनाकर याद की यात्रा सिखलाते हैं। योग अक्षर भक्ति का है। ज्ञान देने वाला एक ही बाप ज्ञान सागर है। उनको ही सद्गुरु कहा जाता है। बाकी सभी हैं गुरु। सच्च बोलने वाला, सच्च खण्ड स्थापन करनेवाला वही है। भारत सच्च खण्ड था। वहां सभी देवी-देवतायें निवास करते थे। तुम जानते हो बरोबर हम अभी मनुष्य से देवता बन रहे हैं। तुम बच्चों को समझाते हैं सच्च बाप के साथ, अन्दर बाहर सच्च बनना है। पहले तो कदम2 पर झूठ ही झूठ ही था। वह सभी छोड़ना पड़ेगा। अगर स्वर्ग में ऊंच पद पाना चाहते हो तो। भल स्वर्ग में तो बहुत जावेंगे परन्तु बाप को जान कर भी विकर्मों का बोझा न उतारा तो सजा खाकर हिसाब- किताब चुकुत करना पड़ेगा। फिर भी पद कम हो जावेगा। यह राजधानी स्थापन हो रही है पुरुषोत्तम संगम युग पर। राजधानी न सतयुग में न कलियुग में स्थापन हो सकती है न बाप कलियुग वा सतयुग में आते हैं। इस युग को ही कहा जाता है सर्वोत्तम कल्याण कारी युग। इसमें ही बाप आकर सभी का कल्याण करते हैं। यह भी जानते हो कलियुग के बाद सतयुग आता है। इसलिए संगम युग भी जरुर चाहिए। बाप ने समझाया है यह पतित पुरानी दुनिया है। गायन भी है दूर देश का रहने वाला आया देश पराया। तो पराये देश में अपने बच्चे कहां से मिलेंगे। पराये देश में फिर पराये बच्चे ही मिलते हैं। उन्हों को अच्छी रीत समझाते हैं। मैं किस में प्रवेश करता हूं। अपना भी परिचय देते हैं और जिस में प्रवेश करता हूं उनका भी समझाता हूं कि बहुत जन्मों के अन्त में मैं ... कितना क्लीयर है। सामने देखते हो ब्रह्मा और विष्णु। बाबा ने समझाया है शंकर की कोई पार्ट नहीं है। न सूक्ष्मवतन में ऐसा शंकर होता है। नाग-बलाएं वा बैल आदि पर सवारी होती नहीं। सूक्ष्मवतन का तो सिर्फ सा0 होता है। अभी तुम यहां पुरुषार्थी हो। सम्पूर्ण पवित्र तो नहीं हो। सम्पूर्ण पवित्र को फरिश्ता कहा जाता है। जो पवित्र नहीं उनको पतित ही कहेंगे। फिर फरिश्ता बनने बाद देवता बनते हैं। सूक्ष्मवतन में सम्पूर्ण तुम देखते हो। उन्हों को फरिश्ता कहा जाता है। तो बाप समझाते हैं बच्चे एक ही अलफ को याद करना है। अलफ माना बाबा। उनको अल्लाह भी कहते हैं। यह तो बच्चे समझ गये हैं बाप से स्वर्ग का वरसा मिलता है। वही स्वर्ग रचते हैं। कैसे रचते हैं वह भी समझाया है। याद की यात्रा और ज्ञान से। भक्ति में ज्ञान नहीं होता। अज्ञान बिल्कुल अलग, भक्ति बिल्कुल अलग है। ज्ञान सिर्फ एक बाप ही देते हैं ब्राह्मणों को। ब्राह्मण चोटी है ना। अभी तुम ब्राह्मण हो। फिर बांजेली खेलेंगे। ब्राह्मण देवता क्षत्री ... इसको कहा जाता है विराटरूप। जो बच्चों को चित्र भी दिखाया है। विराट रूप कोई ब्रह्मा, विष्णु, शंकर को नहीं कहेंगे। उन में चोटी तो ब्राह्मण है नहीं। बाप ब्रह्मा तन में आते हैं। यह तो कोई जानते ही नहीं। ब्राह्मण कुल ही सर्वोत्त कुल है। जब कि बाप आकर पढ़ाते हैं। बाप शुद्रों को तो नहीं पढ़ावेंगे। ब्राह्मणों को ही पढ़ाते हैं। पढ़ाई में भी टाईम लगता है। बच्चे समझते हैं यह राजधानी स्थापन होती है। और कोई पुरुषोत्तम संगम युग होता ही नहीं। जब कि तुम इतने ऊंच ते ऊंच पुरुषोत्तम बनो। यह भी बच्चे जानते हैं नई दुनिया कौन रचते हैं। बाप ही रचेंगे। यह भूलो मत। माया तुमको बहुत भूलाती है। उनका तो धंधा ही यह है। ज्ञान में इतना इन्टरफेयर नहीं करती है याद में ही बहुत करती है। आत्मा में बहुत किचड़ा पड़ा हुआ है। वह याद बिगर साफ हो न सके। योग अक्षर से बच्चे बहुत मुंझते हैं। कहते हैं हमारा योग नहीं लगता। वास्तव में योग अक्षर उन हठयोगियों का है। सन्यासी कहते हैं ब्रह्म में योग लगाना

है। अभीब्रह्म तत्व तो बहुत लम्बा चौड़ा है। जैसे आकश भी लम्बा चौड़ा है ना। जैसे आकश में स्टार्स देखने में आते हैं वैसे वहां भी छोटे2 स्टार्स मिसल आत्मायें हैं वह है आसमान से भी पार। जहां सूर्य चांद की गम नहीं है। तुम देखते तो कितने छोटे2 राकेट्स हो। तब बाबा कहते हैं पहले2 आत्मा का ज्ञान देना चाहिए। वह तो एक भगवान ही दे सकते हैं। ऐसे नहीं कि सिर्फ भगवान को नहीं जानते परन्तु आत्मा को भी नहीं जानते हैं। भल समझते हैं भृकुटि केबीच सितारा चमकता है। आत्मा निवास करती है परन्तु उसका किसको भी पता नहीं है कि इतनी छोटी आत्मा में 84 के चक्र का पार्ट कैसे भरा हुआ है। इनको ही कुदरत कहा जाता है। और कुछ कह नहीं सकते हैं। हम आत्मा में 84 का पार्ट सदैव चक्र लगाते रहते हैं। हर 5000 वर्ष बाद यह चक्र फिरता रहता है। यह ड्रामा में नूंध है। यह दुनिया ही अविनाशी है। कब विनाश को नहीं पाती। वह लोग दिखाते हैं बड़ी प्रलय होती है फिर कृष्ण अगुष्ठा चुसते पिपर के पत्ते पर आये आया। परन्तु ऐसे होता थोड़े ही है। यह तो बेकायदे हैं। महाप्रलय कब होती नहीं। एक धर्म की स्थापना बाकी और सभी धर्मों का विनाश यह तो चलता ही रहता है। इस समय तुम जानते हो मुख्य तीन धर्म है। यह तो है कल्याणी संगम युग। बुधि से समझना चाहिए। पुरानी दुनिया और नई दुनिया में रात दिन का फर्क है। कल नई दुनिया थी। आज पुरानीदुनिया है। कल की दुनिया में क्या था यह तुम समझ सकते हो। जो जिस धर्म का है उस धर्म की ही स्थापना करते हैं। वह तो सिर्फ एक आते हैं। बहुत नहीं होते हैं। ऐसे नहींकि आने से ही भक्ति मार्ग शुरु हो जाता है। नहीं। बहुत जब ढेर होते हैं तब भक्ति मार्ग शुरु होता है। अभी बाप ने कहा हेहियर नो ईविल। बच्चों को समझाया है भक्ति मार्ग की बातें तुमको सुननी नहीं है। कितनी टां2 करते हैं। संस्कृत की होशियारी दिखाते हैं। ज्ञान रिंचक भी नहीं। जैसे कि ज्ञान सुना ही नहीं है। भक्ति और ज्ञान गाया जाता है ना। ब्राह्मणों का ज्ञान दिन, भक्ति की है रात। तुम ब्राहमण हो ना। ब्राहमणों की चोटी भी होनी चाहिए ना। बाप कहते हैं तुम बच्चों को कोई तकलीफ नहीं देता हूं। बाप बच्चों को कब कोई तकलीफ नहीं देंगे। मोस्ट बिलवेड बाप है। कहते हैं मैंतुम्हारा सदगति दाता, दुःख हर्ता, सुख कर्ता हूं। याद भी मुझ एक को करते हो। भक्ति मार्ग में क्या2 कर दिया है। मुझे कितनी गालियां देते हैं। कहते हैं गाड इज वन। सृष्टि का चक्र भी एक ही है। ऐसे नहीं आकाश में कोई दुनियायें हैं। आकाश में है स्टार्स। मनुष्य समझते हैं एक एक स्टार में सृष्टि है। नीचे भी दुनियायें हैं। यह सभी हैं भक्ति मार्ग की बातें। सभी जानते हैं ऊंच ते ऊंच भगवान एक ही है। श्लोक भी है ना ... सारी सृष्टि की आत्मायें तुम्हारे में जैसे पिराये हुये हैं। यह जैसे मालाहै। उनको वेहद का रुद्र माला भी कह सकते हैं। शुत्र में बांधे हुये हैं यह जैसे माला है। गाते हैं परन्तु समझते कुछ भी नहीं हैं। बाप आकर समझाते हैं बच्चे मैं तुमको जरा भी तकलीफ नहीं देता हूं। यह भी समझाया है जिन्हों ने कल्प पहले2 भक्ति की है वह ज्ञान में तीखे जायेंगे। भक्ति जाती की है तो फल भी उनको जाती मिलना चाहिए। कहते हैं ना भक्ति का फल भगवान देते है। वह तो है ज्ञान का सागर। तो जरूर ज्ञान से ही फल देंगे। भक्ति के फल का किसको भी पता नहीं है। भक्तिका फल है ज्ञान। ज्ञान से स्वर्ग का सुख मिलता है। तो फल देते हैं अर्थातनर्कवासी से स्वर्ग वासी बनाते हैं। स्वर्गवासी एक बाप ही बनाते हैं। रावण का भी किसको पता नहीं है। कहते भी हैं यह पुरानी दुनिया है। कबसे पुरानी है वह हिसाब नहीं लगा सकते। बाप बैठ समझाते हैं। वह है मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़ का बीज रूप। सत है। वह कब विनाश नहीं होता। उनको उल्टा झाड़ कहते हैं। बाप ऊपर में है। आत्मायें बाप को ऊपर देख बुलातीहै। शरीर तो नहीं बुला सकती। आत्मा तो एक शरीर छोड़ दूसरे में जाती है। आत्मा है अविनाशी। वह कब घटती न बढ़ती है। आत्मा कब भी मृत्यु को नहीं पाती। यह खेल बना हुआ है जो आत्मायें ऊपर से आकर खेल करती है। आत्मा खुद कहती है मैं एक शरीर छोड़ दूसरा लेतीहूं। खेल करता हूं। सारी खेल के आदि मध्य अन्त का राज़ भी बताया है। आस्तिक भी बनाया है। यह भी बताया है इन ल०ना० में यह

ज्ञान नहीं है। वहां तो आस्तिक नास्तिक का पता ही नहीं रहता। इस समय बाप ही आस्तिक नास्तिक का अर्थ समझाते हैं। नास्तिक उनको कहा जाता है जो न बाप को न रचना के आदि मध्य अन्त को जानते हैं, इयुरेशन को भी नहीं जानते हैं उनको नास्तिक कहा जाता है। इस समय तुम आस्तिक बनते हो। वहां यह बातें ही नहीं। खेल है ना। जो बात है एक सेकण्ड में होती है वह दूसरे सेकण्ड में नहीं होती। ड्रामा में टिक2 होती रहती है जो पास्ट हुआ चक्र फिरता जावेगा। जैसे वायसकोप होता है, दो घंटे बाद वायसकोप चलेगा फिर हू बहू रिपीट होगा। मकान आद तोड़ डालते फिर देखेंगे बना हुआ। हू बहु बहू रिपीट होता है। इस में मुंझने की बात ही नहीं। मुख्य बात आत्माओं का और परमात्मा का है। आत्मायें परमात्मा अलग रहे बहुकाल ..अलग होते हैं तो यहां आते हैं पार्ट बजाने। तुमपूरे 5000 वर्ष रहते हो अलग। तुम मीठे2 बच्चों का आलराउण्ड पार्ट है। इसलिए तुमको ही समझाते हैं। ज्ञान के भी तुम अधिकारी हो। पिछाड़ी में तुम अच्छी रीत समझेंगे। सब से जास्ती भक्ति किसने की है ज्ञान में भी वही तीखे जावेंगे। पद भी ऊंच पावेंगे। पहले2 एक शिव बाबा की भी भक्ति होती है। फिर देवताओं की फिर 5 तत्वों की भी भक्ति करते हैं। व्यभिचारी बन जाते हैं। अभी बेहद का बाप तुमको बेहद में ले जाते हैं। वह फिर बेहद की भक्ति के अज्ञान में ले जाते हैं। अभी तुम बच्चों को बाप समझाते हैं अपन को आत्मा समझो बाप को याद करते रहो। फिर भी यहां से बाहर जाने से माया भूला देती है। जैसे गर्भ में प्रतिज्ञा करते हैं हम फिर ऐसे कर्म न करेंगे, बाहर आने से ही सब भूल जाते हैं। यह भी ऐसे ही हैं, बाहर जाने से ही भूल जाते हैं। यह भूल और अभूल का खेल है।

अभी तुम बाप के एडाप्टेड बच्चे बने हो। शिव बाबा है ना। वह है सभी आत्माओं का बेहद का बाप। बाबा कितना दूर से आते हैं परमधाम से आते हैं। परमधाम से आते हैं तो जरूर सौगात ले आयेंगे। तिरी पर बहिश्त सौगात ले आते हैं ना। बाप कहते हैं सेकण्ड में विश्व की बादशाही लो। सिर्फ बाप को जानो। सभी आत्माओं का बाप तो है ना। कहते हैं मैं तुम्हारा बाप हूं। मैं जैसे आता हूं वह भी तुमको समझाता हूं। मुझे रथ तो जरूर चाहिए। कौन सा रथ? कोई महात्मा का तो नहीं ले सकते। मनुष्य कितने बेसमझ हैं। कहते हैं तुम ब्रह्मा को भगवान, ब्रह्मा को देवता कहते हो। अरे हम कहां कहते हैं। झाड़ ऊपर में एकदम अन्त में खड़े हैं। जब कि झाड़ सारा तमोप्रधान है। ब्रह्मा भी वहां ही खड़ा है। तो बहुत जन्मों के अन्त का जन्म हुआ ना। बाबा खुद भी कहते हैं मेरे बहुत जन्मों के अन्त में जन्म में, जब वानप्रस्त अवस्था हुई तब बाबा आते हैं। जो आकर धंधा आद छुड़ाया। 60 वर्ष के बाद मनुष्य भक्ति करते हैं भगवान से मिलने के लिए। पूरी वानप्रस्त अवस्था बताते हैं। फिर कहते हैं 60 वर्ष बाद इनकी आयु बढ़ती है। शास्त्रों में भल आयु लिख दी है ब्रह्मा को आयु 100 वर्ष। बाबा कोई शास्त्रों को मानते नहीं हैं। अन्दाजा बताया जाता है 100 आयु। हाथ की नसी में भी देखते तो कहते थे आयु 70 वर्ष की है। अगर बढ़ें तो बहुत बढ़ जावेगा। उन पर भी तो विश्वास नहीं कर सकते। भक्तिमार्ग वालों पर तुम विश्वास नहीं रखते हो। काल वन्द। बाप ने कहा है यह है ज्ञान। अभी भक्ति का भी नाम भी नहीं सुनना है। परन्तु ऐसे तुम कान बन्द करो तो वह लोग इनसल्ट समझेंगे। बाप कहते हैं वह सभी हैं मनुष्य मत पर। शास्त्र लिखने वाले भी मनुष्य हैं ना। देवतायें तो लिखते ही नहीं। न पढ़ते हैं। सतयुग में शास्त्र होते ही नहीं। शास्त्रों में कर्म-काण्ड का सभी लिखा हुआ है। यहां वह बात ही नहीं। तुम देखते हो बाबा ज्ञान देते हैं। भक्ति मार्ग में तो हम शास्त्र बहुत ही पढ़े हैं। कोई पूछे तुम वेद-शास्त्र आद को नहीं मानते हो? बोलो जो भी मनुष्य मात्र हैं उन सब से जास्ती हम जानते हैं, शुरू से लेकर अव्यभिचारी भक्ति हमने ही शुरू की है। अभी हमको ज्ञान मिला है। ज्ञान से सदगति होती है। फिर हम भक्ति को क्या करेंगे। कल हम भक्ति करते थे आज नहीं करते हैं। शूद्र से ब्राह्मण बने हैं। कल हम वेद शास्त्र आद पढ़ते थे मंदिर में जाते थे आज मंदिर में जाना छोड़ दिया। तो बाप कितना सहज बात समझाते हैं। मीठे2 बच्चे अपन को आत्मा निश्चय करो। मैं आत्मा हूं। वह कह देते अल्ला हूं। तुमको शिक्षा मिलती है मैं आत्मा हूं। जो भी जाते हैं सभी ऐसे

बैठ कहते हैं अल्ला हूं ... बड़े2 लखपति करोड़पति भी उन्हों के पास जाते हैं। यहां तो तुमको बाप कहते हैं बोलो मैं आत्मा हूं। बाप का बच्चा हूं। यह हीतुम घड़ी2 भूलते हो। माया भुला देती है देहअभिमानी बनने से फिर उल्टा कुछ हो जाता है। इसलिए बाप कहते हैं टाईम वेस्ट मत करो। भूलो मत। आत्मा को बाप ने एडाप्ट किया कि तुम हमारे बच्चे हो। स्वर्ग मालिक बनने वाले हो। ऐसे बाप को भूल जाना ऐसे तो बेकायदे हैं। परन्तु माया बड़ी जबरदस्त है। तुममुझे सर्वशक्तिवान कहते हो परन्तु माया भी कम नहीं हैं। सभी आत्माओं को तमोप्रधान बना देती हैं। ड्रामा अनुसार बनना ही है। तुम सतोप्रधान बनते हो तो सभी बनते हैं। तमोप्रधान बनते हो तो सभी बनते हैं। सभी आत्मा पहले2 शान्तिधाम में जावेंगी। इसलिए बाप कहते हैं शान्तिधाम और सुखधाम को याद करो। दुःखधाम को भूलते जाओ। अन्दर में आना चाहिए हम सुखधाम जाते हैं। वाया शान्तिधाम। दुःखधाम होगा ही नहीं। यह बच्चों की बुधि में पक्का2 याद रहना चाहिए। गायन भी है संग तारे ... एक का ही संग तारता है। कुसंग हुई भक्ति। भक्ति का संग बोरे। भक्ति के गुरु झूठ बोलते हैं। पहले तो फिर भी ऋषि-मुनि आद सच्च बोलते थे कि हम ईश्वर और उनकी रचना को नहीं जानते हैं। सच्च बतलाते थे। वह भी पुनर्जन्म लेते2 अभी पतित बन पड़े हैं। तो झूठ बोलने लग पड़े। कब कहते हैं भगवान युगे2 आता है। फिर कब कहते हैं 24 अवतार। कच्छ-मच्छ में भी उनको ले गये हैं। कितना तमोप्रधान बने हैं। फिर कहते हैं सर्वव्यापी है। वह भी कर के मनुष्य में कहे। यह तो इतने तमोप्रधान बने हैं जो कहदेते हैं ठिक्कर-भित्तर में है। सभी में परमात्मा है। बाप आकर समझाते हैं बाप की ग्लानी करने कारण कितना दुःख को पाया है। सतयुग में तुम कितने धनवान थे। अथाह धन था। तुम्हारे धन से वह लोग कितना धनवान बने हैं। कितना लूट कर ले गये ... हीरे सोने आद की खानियां तो सभी के पास होते हैं ना। अभी भी अमेरिका से आते हैं। युक्ति रची हुई है। कितनी ठगी है। दुनिया में तो सभी तरफ घोर-अंधियारा ही है। ठगी हीठगी है। तब बाप आकर सच्च खण्ड स्थापन करते हैं। बाकी झूठखण्ड का विनाश हो जाता है। बाप कहते हैं यह सारी पुरानी दुनिया इस रुद्र ज्ञान यज्ञ में स्वाहा हो जावेगी। इसको कहा जाता है बेहद का ईश्वरीय यज्ञ। रुद्र ज्ञान सज्ञ है। जिस यज्ञ में सब स्वाहा होनी है। बेहद का बड़ा यज्ञ है। सभी स्वाहा हो जावेंगे। बाकी थोड़े बचेंगे। बाप आये ही हैं एक धर्म की स्थापना करने। वह पूरी हो जावेगी तोबाकी सभी का विनाश हो जावेगा। तुम जानते हो हम पुरुषार्थ कर रहे हैं। जितना कल्प2 किया है उतना ही अभी तुम्हारापुरुषार्थ होगा। देवीधर्म की स्थापना बाप ही करते हैं। तुम ब्राहमण से देवता बनते हो। ब्राहमणों का झाड़ बहुत छोटा, नाजुक है। माया का तूफान लगने से ही गिर पड़ते हैं। लिखते हैं बाबा हम गिर गये। बाप कहते हैं तुमको गोरा बनाने आये, तुम फिर काला मुंह कर दिया। इसमें क्षमा की तो बात ही नहीं। रंग लग गया फिर कर ही क्या सकते। बाप कहेंगे अच्छा फिर से पुरुषार्थ करो। कोई भी भूल न करो। आगे से भी तीखा पुरुषार्थ करो। यह भी बच्चों को समझाया है मीदरों मैराम को, ना० को, काला क्यों बनाया है। तुम पूछेंगे तो कहेंगे यह कल की छोटी बच्चियां आई हैं हम से पूछने। तो तुम समझते होइन भक्तों को थोड़े ही मालूम है बुधि में भी नहीं आता श्रीना० काला कैसे होगा। वह तो गोरा ही होगा। देवता कहा जाता है फिर वह काला क्यों। यह राज़ तुम बच्चों को बता दिया है। शिव को भी काला कर दिया है। अच्छा फिर भी बाप कहते हैं बच्चे भूलो मत। अपन को आत्मा समझो। पहले2 यह अभ्यास करो। मैं आत्मा हूं। बाप को याद करने से विकर्म विनाश होते जावेंगे। इसको कहा जाता है सहज याद। बेहद के बाप ने तुमको एडाप्ट किया है। तुम एडाप्टेड बच्चे हो। तो उस बाप को ही याद करना पड़े जिससे विश्व की बादशाही मिलती है। जितना याद करेंगे उतना ही विकर्म विनाश होंगे। देवीगुण भी धारण करना है। बहुत हैं जो घर में गालियां भी देते हैं। बाप कहते हैं बच्चे बहुत प्यार से बोलना है। बाबा पास रिपोर्ट तो आती है ना। बाबा फलाने बहुत क्रोध करते हैं। फलाना घर में आता है तो धमचक्कर मचा देते हैं। तो बाप समझाते हैं बहुत2 मीठा बनना है। कड़वा बोल न कि निकालना है। तुम तो कहते हो शिव बाबा को भाकी पहनें। यह बाबा कैसे शिव बाबा को भाकी पहन सके। यह तो साथ में इकट्ठा है। फिर भी भूल जाते हैं। भूले नहीं तो कर्मातीत अवस्था हो जाय। अच्छा बच्चों को गुडमार्निंग और नमस्ते।